प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ
वर्धा (म प्र)

तीसरी बार २०,०००
कुल प्रतियाँ ३०,०००
अगस्त, १९५५
मूल्य दो आना

मुद्रक :
ओम् प्रकाश कपूर,
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय,
बनारस ४७९२-१२

दो शब्द

विमलाबहन ठकार एक प्रतिभावान नवयुवती हैं। सुशिक्षित और विदुषी हैं। विदेशों का पर्यटन किया है। भगवद्भक्त हैं। अत्यन्त मीठे भजन गाती हैं। ओजस्वी वक्ता हैं। भूदान-यज्ञ को इनसे जो बल मिला है, वह देश भर में दो-चार से ही मिला होगा। बुद्धिजीवी तथा युवक-समाज को विमलाबहन के भाषणों से विशेष प्रेरणा मिली है।

प्रस्तुत पुस्तिका में विमलाजी का मध्यभारत का एक भाषण छपा है। थोड़े से गंभीर शब्दों में उन्होंने भूदान-यज्ञ तथा संपत्तिदान-यज्ञ का हृदयग्राही विवेचन कर दिया है, और जो साधारण प्रश्न इस संबंध में पूछे जाते हैं उनका समाधानकारी उत्तर दे दिया है। विमलाबहन ने आम सभाओं तथा शिक्षण-शिविरों में अपने दिये हुए भाषणों से हजारों को भूदान-कार्य में सहयोग देने को प्रोत्साहित किया है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तिका द्वारा उनकी प्रेरक वाणी अधिकाधिक व्यक्तियों के हृदय में प्रवेश करेगी।

—जयप्रकाश नारायण

हमारे पास जितनी भी जमीन, संपत्ति, बुद्धि और शक्ति है—वह सब हमें आम जनता के लिए प्राप्त हुई है। ये हमारी निजी संपत्तियाँ नहीं, दैवी सपत्तियाँ हैं, परमेश्वर की देनें हैं। उनका विनियोग जनता की सेवा में करना चाहिए। जिस तरह हम कुटुंब में मिल-जुलकर काम करते हैं, वैसे ही हमें सृष्टि की उपासना करनी है। अपने सुख-दुःख में दूसरो को हिस्सा देना है। . हमें जो सारी समाज-रचना बदलनी है, उसीका यह श्रीगणेश है। सबका मन समान हो, सबका हृदय समान हो, सबका मत्र समान हो। इस तरह साम्ययोग की शिक्षा, जो सब महापुरुषो ने हमे दी थी, उसकी प्राप्ति नहीं, साधना करनी है और उसके लिए पहला कदम यह भूदान-यज्ञ है, क्योंकि भूमि सब प्रकार की सपत्ति के उत्पादन का सबसे बड़ा साधन है। उसका सबके काम के लिए, सम्मिलित और संयुक्त उपयोग होना चाहिए—उसमे किसीको कम या अधिक अधिकार नहीं होना चाहिए।

—विनोबा

भूदान-दीपिका

किसीका अनुवाद-प्रतिवाद नहीं

भूदान-आन्दोलन स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद इस देश में से गरीबी और अमीरी के निराकरण के लिए अहिंसा और सत्याग्रह की नीति पर अधिष्ठित एक शानदार इन्कलाब है। हिन्दुस्तान में घूमते हुए मैंने यह अनुभव किया है कि हिन्दुस्तान के सुशिक्षित लोग भी अब तक इस आन्दोलन की महानता को नहीं समझ पाये हैं, न सोचने के लिए फुरसत ही निकाल पाये हैं। वे समझते हैं कि यह आन्दोलन गांधीवाद का समर्थन करनेवाला आन्दोलन है; साम्यवाद को टालनेवाला, साम्यवादी क्रांति को रोकनेवाला आन्दोलन है। कुछ व्यक्ति समझते हैं कि दान-धर्म के नाम पर महज जमीन बटोरने और बाँटने का एक आन्दोलन है। मैं आप लोगों से निवेदन करने आयी हूँ कि यह आन्दोलन न तो किसी वाद का अनुवाद है और न किसी वाद का प्रतिवाद ही।

भारत की मिट्टी का माकूल जवाब

यह आन्दोलन सिर्फ जमीन बटोरने का आन्दोलन नहीं है। आज हमारे देश के सामने जो मूलभूत समस्याएँ खड़ी हैं, उनको सुलझाने के लिए भारत की इस धरती में से निकला हुआ एक माकूल जवाब है। विनोबाजी कितना ही महान् व्यक्तित्व रखनेवाले सत्पुरुष क्यों न हों, यदि उनका विचार हमारी राष्ट्रीय समस्याओं के साथ कुछ अनुबंध न रखता, उसके पीछे परिस्थिति

मे आकाक्षा और आवश्यकता न होती, तो वह विचार समस्त देश को अनुप्राणित न कर पाता और वह बिजली वायु-मंडल में नहीं दौडा पाता, जो इधर दो-ढाई वर्षों से उसने इस देश में फैलाई है।

समस्या का त्रिविध स्वरूप

हमारी राष्ट्रीय समस्या का रूप त्रिविध है। उसका राजनैतिक स्वरूप यह है कि सियासी आजादी हासिल करने के बाद हम लोगों ने जान-बूझकर, सोच-समझकर, प्रातिनिधिक लोकसत्ता का निर्माण किया, जनतंत्र का निर्माण किया। यह जनतत्र हम किस प्रकार सुरक्षित और सावित रखे, यह इस मुल्क के सामने आज वडी गंभीर समस्या है। संसार में जनतंत्र के सबसे बड़े हिमायती इग्लैंड और अमेरिका जैसे देश आज जनतत्र को न सुरक्षित पाते हैं, न सावित रख सकते हैं। साबित इसलिए नहीं रख सकते कि वहाँ पर गरीबी और अमीरी का अन्त वे जनतत्र की मार्फत कर नहीं पाये हैं। सावित इसलिए भी नहीं रख पाते कि लोगो की व्यवस्थाओ में जो स्वार्थों का विरोध होता है, उसका परिहार वे कर नहीं पाये। सुरक्षित वे इसलिए नहीं समझते हैं कि जब तक गरीबी और अमीरी रहेगी, तब तक जनतत्र एक कागजी जनतत्र (Formal Democracy) के रूप मे रहेगा और उसको जनतत्र का वास्तविक स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकता। जनतत्र को सुरक्षित रखने के लिए आज उस देश के नेताओं को साम्यवाद के विरोध का एक हौआ जनता के सामने खडा रखना पडता है। जिन देशो में गरीबी का निराकरण हुआ, आर्थिक विषमता का निराकरण हुआ, उन देशो मे जनतत्र बच नहीं पाया। जनता को जनतत्र से हाथ धोना पडा। ससार के दार्शनिको की आज यही धारणा हो गयी है कि जनतत्र की मार्फत

आर्थिक विषमता का निराकरण होना असंभव है। युग का यह हमें आह्वान है, ज़माने की चुनौती है। क्या भारतवर्ष जनतंत्र की मार्फत गरीबी-अमीरी को मिटा सकेगा—जनतंत्र के संदर्भ में अन्याय और शोषण को हटा सकेगा? मैंने राजनैतिक पहलू के साथ-साथ उसका अविभाज्य आर्थिक पहलू भी संक्षेप में यहाँ रख दिया। जाहिर है कि गरीबी-अमीरी नहीं मिटेगी और अन्याय-शोषण नहीं रुकेगा, जब तक जनतंत्र सुरक्षित नहीं है। हमको जनतंत्र सुरक्षित रखना है। जनतंत्र की मार्फत गरीबी-अमीरी को हटाना है। इसी समस्या का सांस्कृतिक पहलू यह है कि गरीबी और अमीरी को मिटाने के लिए किसी ऐसी प्रक्रिया का हमको प्रयोग करना पड़ेगा, जिस प्रक्रिया में मानव का मूल्य सुरक्षित रहेगा, इंसानियत को हम बचा सकेंगे।

नयी प्रक्रिया की प्रतीक्षा

आज तक संसार में जितनी क्रांतियाँ हुई, जैसा कि उन क्रांतिकारियों का दावा रहा, उन क्रांतियों में सामाजिक परिवर्तन के लिए, समाज के ढाँचे को बदल देने के लिए, इन्सान की बलि दी गयी, मनुष्य की हत्या की गयी, विराट् परिमाण में मानव का खून बहाया गया। आज संसार क्रांति की ऐसी प्रक्रिया की प्रतीक्षा में है, जिसमें समाज-परिवर्तन के साथ-साथ व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन होगा, राजी-खुशी से होगा। इतिहास के पन्नों से हमने सीखा है कि जब तक व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन स्वेच्छा से नहीं आयेगा, प्रतिक्रांति की जड़ बनी रहेगी और उसका डर सरकार के सिर पर सवार रहेगा।

प्रतिक्रांति की आशंका

छत्तीस-सैंतीस वर्ष पहले रूस ने एक महान् प्रयोग वहाँ के क्रांतिकारियों ने किया। क्या वे क्रांतिकारी निर्मम थे? क्या वे

निर्घृण थे ? क्या उनके हृदय नहीं था ? क्या उनके बाल-बच्चे नहीं थे ? सब कुछ था, लेकिन उन्होने सोचा कि पहले हम सामाजिक ढाँचे को बदल देंगे, भौतिक परिवर्तन करेंगे और बाद में कानून के सहारे, दंड-शक्ति और शरीर-शक्ति के आश्रय से, मनुष्य के हृदय और बुद्धि को भी बदल सकेंगे। लेकिन बावजूद इसके कि सरकार के इशारों पर साहित्यिक और संगीतज्ञ नाचते रहे, कलाकार और वैज्ञानिक भी खेलते रहे, आज भी रूस की सरकार प्रतिक्रांति के भय से मुक्त नहीं है। बेरिया, मेलेंकोव, मोलोटोव आदि स्टालिन के जीवन-काल में उसके साथी थे, जिम्मेदार ओहदों पर काम करते थे, पर स्टालिन की मृत्यु होते ही चंद महीनो में बेरिया को लोकद्रोही करार दिया गया और अन्त मे उसकी हत्या की गयी। जनता का राज्य बने, जनता की सरकार बने और इसके बावजूद प्रतिक्रांति की जड़ बनी रहे, क्या इसको आप क्रांति कहेंगे ?

यथार्थ क्रांति

यदि क्राति से हमारा मतलब मनुष्य के हृदय और बुद्धि में परिवर्तन करना है, यदि क्रांति से हमारा मतलब सामाजिक जीवन के मूल्यो में ही आमूलाग्र परिवर्तन कर देना है, यदि इन्कलाब से हमारा मतलब इसान के दिल और दिमाग मे जड़-मूल से तब्दीली लाना है, तो स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ, जो व्यक्ति के जीवन में स्वेच्छा से परिवर्तन लावे, ऐसी ही प्रक्रिया अब हम अख्तियार कर सकते हैं। हमारा दावा है कि भूदान-यज्ञ-आदोलन की प्रक्रिया मे इन तीनो कमियो की पूर्ति होती है और आज जो समय का तकाजा है, जमाने की माँग है, उसको हम पूरी कर सकते हैं। विनोबाजी के आंदोलन के पीछे जो ऐतिहासिक आवश्यकता और परिस्थिति की आकांक्षा

है, उसका निवेदन मैंने बहुत ही संक्षेप में यहाँ किया है।

शस्त्र और कानून का रास्ता

शस्त्र-शक्ति के आश्रय से क्रांति हो ही नहीं सकती, यह हमारी मान्यता है, क्योंकि उसमें प्रतिक्रांति का भय बना रहता है और जब तक प्रतिक्रांति का भय बना रहेगा तब तक क्रांति चिरस्थायी और शाश्वत नहीं हो सकेगी। लोग कहते हैं कि शस्त्र-शक्ति का रास्ता छोड़ दीजिये, लेकिन विनोबाजी कानून क्यों नहीं बनवा लेते ? विनोबा का सरकार पर तो बड़ा वजन है, गांधीवालों की सरकार बनी है। ये दर-दर घूमने के बजाय, मुट्ठी-मुट्ठी मिट्टी माँगने के बजाय, क्यों नहीं सरकार को मजबूर करते कि वह कानून बनाये और कानून द्वारा ही भूमि का बँटवारा कर ले ? क्यों नहीं इस प्रकार सर्वांगीण क्रांति करवा लेते ? पर कानून से यदि क्रांति हो सकती तो वह करने के लिए हम तैयार होते।

कानून की मर्यादाएँ

हम कानून के विरोधी नहीं हैं। लेकिन कानून की अपनी मर्यादाएँ है, जो हमको ध्यान मे रखनी चाहिए। पहली मर्यादा तो यह है कि कानून के लिए एक संदर्भ की आवश्यकता होती है और एक अधिष्ठान भी अनिवार्य होता है। परिस्थिति मे संदर्भ और जनता में अधिष्ठान निर्माण करने का यह जो काम है. वह कानून अपने आप नहीं कर सकता। कानून के साथ हमारी पहली दिक्कत यदि कुछ होगी तो वह यही है।

हमारी प्रतिगामी वृत्ति का विनोबा पर प्रहार

सब जानते है कि अस्पृश्यता-निवारण का कानून बन गया। लेकिन मैंने देखा है कि अच्छे-अच्छे विद्याधारी, बुद्धिधारी लोगों के घरो में छुआछूत का भाव आज भी बना हुआ है। लेजिस्लेटिव

असेम्बली और कौंसिल के सदस्यों और मंत्रियों के घरों तक में मैंने आज भी छुआछूत का भाव देखा है। यही कारण है कि वैद्यनाथ-धाम में विनोबा-जैसे समस्त मानव जाति के ललामभूत होनेवाले महापुरुष के शरीर पर पंडों की लाठियों का प्रहार हो सका। वह पंडों की लाठियों का प्रहार नहीं था। वह तो, हम लोगों में जो प्रतिगामी वृत्ति है, उस वृत्ति का प्रहार विनोबा के शरीर पर हुआ था। पंडों की लाठियाँ तो निमित्त-मात्र थीं।

एक दृष्टांत : कानून दिल का नहीं

शारदा-कानून बना है कि लड़की की शादी चौदह साल से पहले न हो। बिहार में घूमते समय मैं एक एम० एल० ए० भाई के घर पहुँची। उनकी लड़की की शादी छोटी उम्र में हो गयी। मैंने पूछा, "भाई साहब, आप तो धारा-सभा में बैठते हैं, कानून जानते हैं, भला आपकी लड़की की शादी सात साल की उम्र में हो गयी!" कहने लगे, "बहनजी, कानून तो कागजों पर पड़ा है। हम लोग देहातों में रहते हैं। गाँव है, समाज है, रूढ़ि है, सम्प्रदाय है, घर में नानी हैं, दादी हैं, परदादी हैं।" कानून जाननेवाले और कानून को माननेवाले भाइयों की यह हालत है कि कानून उनके जीवन में परिवर्तन नहीं ला सका।

जोर-जबरदस्ती से आचरण पर कानून नियंत्रण रख सकता है, मनुष्य के विचार में परिवर्तन करने की शक्ति कानून में नहीं है।

कानून की दूसरी मर्यादा

कानून की दूसरी मर्यादा यह है कि कानून अधिकार तो दे सकता है, लेकिन उस अधिकार के उपयोग की शक्ति वह नहीं दे सकता। स्वतन्त्र भारत के संविधान ने स्त्री को नागरिक बना दिया। पुरुष की बराबरी से कंधे-से-कंधा भिड़ाकर राष्ट्र के

नव-निर्माण की जिम्मेदारी उसको सौंपी गयी, लेकिन आज भी राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार में परदे की ऐसी घोर प्रथा है कि स्त्रियाँ चहारदीवारी के भीतर गिरफ्तार हैं। क्रांति करने के लिए कानून अपने में समर्थ नहीं है।

तीसरी मर्यादा

एक तीसरी बात और कह दूँ। कानून बनाने के लिए, कानून की रट लगाने के लिए, जनता को हमें सत्ताभिमुख और सत्तापरायण बनाना पड़ेगा। जनता से जाकर यह कहना पड़ेगा कि आपकी सरकार देहली, पटना, ग्वालियर, बम्बई और कलकत्ते में रहती है और आपको जो कुछ चाहिए, सरकार आपको दे देगी। लेकिन हम जनता में इस प्रकार की घोर गलतफहमी नहीं फैलाना चाहते। जनता से हम तो यह निवेदन करना चाहते हैं कि सरकार देहली, पटना, ग्वालियर, बम्बई में नहीं है। सरकार आप ही हैं। पन्द्रह लाख देहातों में रहनेवाले सब व्यक्ति सरकार हैं। देहली, ग्वालियर, पटना में रहनेवाले, बम्बई-कलकत्ता में वास करनेवाले लोग जनता के मुनीम हैं, जनता की इच्छा और आवश्यकता के अनुसार व्यवस्था करनेवाली वह व्यवस्थापिका-समिति है, प्रबन्ध-समिति है।

शासनहीन समाज का आदर्श

आप जानते हैं कि क्रांतिकारियों के सामने जो लक्ष्य है, जिस आदर्श समाज का नक्शा है, उसमें शासनहीन समाज का, राज्य के समाज में विलीनीकरण की अंतिम अवस्था का, चित्र सामने रखा गया है। सर्वोदय समाज भी शासनहीन समाज की रचना करना चाहता है। शासन-रहित, दंड-निरपेक्ष समाज की योजना सर्वोदय-समाज के सामने भी है। क्रांति की प्रक्रिया में ही राज्य के समाज में विलीनीकरण होने के लिए यदि हम कोई

प्रवन्ध नहीं रखेंगे, तो क्रांति के वाद केन्द्रीय सरकार उसी प्रकार मजबूत बनती चली जायगी, जिस प्रकार आज रूस में है। आज रूस में सरकार तो भगवान् से भी अधिक शक्तिशाली बन गयी है, सर्वसाक्षी है, सर्वव्यापी है। इसलिए कानून की रट लगाने का यह रास्ता, हमें इस लक्ष्य की तरफ ले जानेवाला नहीं है। ठीक उसकी विपम दिशा मे, विपरीत दिशा में, ले जानेवाला रास्ता है।

क्रांति का दर्शन

एक वात और स्पष्ट कर दूँ कि कानून के हम विरोधी नहीं हैं। यदि शस्त्र-शक्ति की विरोधी और दंड-शक्ति से भिन्न जन-शक्ति को जाग्रत करने में हम पूरी तरह से सफल नहीं हुए और अंततोगत्वा हमें कानून की शरण लेनी ही पड़ी, तो हम उसको वरदाश्त भले ही कर लें, लेकिन हमारे सामने जो नक्शा है, जो क्रांतिकारी समाज का दर्शन है, उस समाज में सरकार के कानून से ही समाज-परिवर्तन हो, इसकी गुंजाइश नहीं है। जनतंत्र में पहले जनमत-परिवर्तन और वाद में सरकार की सम्मति की मुहर, यह जन-क्रांति का अनुक्रम है। पहले कानून और वाद में जनमत-परिवर्तन, यह तो हुक्मशाही है, तानाशाही है।

'दान' और 'यज्ञ'

मैंने इस विवेचन मे, कानून की रट हम क्यों नहीं लगाना चाहते, इसके कुछ कारण संक्षेप में रखे। अव रही हमारी 'दान' और 'यज्ञ' की प्रक्रिया। लोग कहते है, शस्त्र-शक्ति नहीं, दंड-शक्ति नहीं, लेकिन यह दान माँगना आपने क्यों शुरू कर दिया ? यह दान माँगना तो भीख माँगना है, याचना करना है। इस प्रकार गैर-जिम्मेदारी से वातें करना उस महापुरुष के साथ, विनोवा के साथ, एक वड़ा भारी और गंभीर अन्याय करना

होगा। विनोबाजी एक अद्यतन वैज्ञानिक दिमाग रखनेवाले महापुरुष हैं, एक संतुलित अध्ययन रखनेवाले तेजस्वी विद्वान् हैं। संस्कृत भाषा पर उनका विशेष प्रभुत्व है। शब्दों का व्याकरण, शब्दों की प्रवृत्तियाँ, शब्दों की प्रकृति वे अच्छी तरह जानते हैं। 'दान' शब्द का प्रयोग उन्होंने उसके परिशुद्ध अर्थ में किया है : 'दानं संविभागः।' बुद्धिमानों के मुकुटमणि भगवान् शंकराचार्य ने परिभाषा की है : 'सम्यक् विभाजनम् दानम्।' किसी भी वस्तु के न्याय्य-वितरण का नाम दान है। याचना करने का नाम दान नहीं है। भीख माँगने और दामन फैलाने का नाम दान नहीं है। अमीर के दरवाजे पर पहुँचकर हम उनसे यह नहीं कहते कि आप दान दीजिये, आपको मुक्ति मिलेगी, आपको स्वर्ग मे ऊँची जगह मिलेगी। हम तो समझाते हैं कि भाई, एक कदम हम लोगों ने उठा लिया, जनता का राज्य बन गया। अब जिसका राज्य बन गया है, क्या वह जनता भूखी रह सकती है? जनता का राज्य बन जाय, राजनैतिक सत्ता और कानून, दोनों गरीब के हाथ में चले जायें और गरीब भूखों मरे तथा मुट्ठी भर लोगों के हाथ में संग्रह रहे, क्या ये तीनों चीजें साथ-साथ चल सकती हैं? गरीबों का राज्य बने, गरीब भूखों मरे और कुछ व्यक्तियों के हाथ में संग्रह रहे, यह अब होनेवाला नहीं है। विनोबा का दान वह पुराना दान नहीं है, जो अमीर की संपत्ति और स्वामित्व का संरक्षण तथा संवर्द्धन करता था। यह दान तो संपत्ति के विसर्जन का संकेत है। यह दान तो संग्रह के प्रायश्चित्त का विधान है। इस दान की दीक्षा और अपरिग्रह के व्रत की दीक्षा विनोबाजी एक व्यक्तिगत नैतिक जीवन के मूल्य की हैसियत से नहीं दे रहे हैं। यह तो एक अभिनव समाज का क्रांतिकारी सामाजिक मूल्य है। यह दान का शानदार क्रांतिकारी अर्थ है।

विनोबा की सर्वतोभद्र 'दान'-नीति

बिहार मे रका नामक एक छोटी-सी रियासत है। वहाँ के राजा साहब ने विनोबा को घर पर बुलाया। जब सब लोग घर पहुँचे, राजा साहब ने विनोबाजी के सामने अत्यन्त नम्रतापूर्वक जमीन के सब कागजात रख दिये। कहने लगे, "बाबा, जितनी जमीन लेना चाहे, ले लीजिये। जितनी लौटाना चाहे, लौटा दीजिये।" एक लाख एकड पड़ती जमीन थी, सब-की-सब विनोबाजी ने ले ली और ढाई हजार एकड़ जेर-काश्त जमीन भी ले ली। बची हुई ढाई हजार एकड़ जमीन लौटा दी और मुस्कराते हुए कहने लगे, "राजा साहब, पहली किस्त लेकर जा रहा हूँ। जो जमीन लौटायी है वह आपके पास रहनी नही चाहिए। सन् १९५७ से पहले यह सब जमीन आप दे दें।" इसका आशय यह था कि जितनी जमीन खुद जोत सकेंगे, जितनी जमीन पर खुद-काश्त कर सकेंगे, उतनी ही जमीन उनके पास रहेगी। मजदूर लगाकर खेती करने का सपना अब छोड देने के सिवा कोई चारा नहीं। मालिक और मजदूर का भेद ही खत्म करना है। उत्पादन के साधन उत्पादकों को दिलाना है। अनुत्पादकों की मालकियत हटानी है। यह विनोबा का शानदार 'दान' है। यदि इसको भी आप भीख मॉगना और याचना करना कहेंगे, तो भाइयो, इन्कलाब के लिए इससे अधिक शानदार कौन-सा दूसरा तरीका हो सकता है, जिसमे मॉगनेवाले का गौरव होता है, देनेवाले की इज्जत बढ़ती है और पानेवाले की भी शान बढ़ती है—सबका समान विकास करनेवाला, सबका समान उत्थान साधनेवाला, यह सर्वतोभद्र दान का तरीका है।

कुछ और उदाहरण

बिहार मे मेरा ऑखो देखा हाल है। रामगढ़ के राजा ने

अपने परिवार में से तीन लाख एकड़ जमीन दे दी और विनोबा-जी की फौज के तुच्छ सिपाही की हैसियत से वे आज रात-दिन काम कर रहे हैं। रॉंची जिले में पालकोट रियासत में मैं काम कर रही थी। राजा साहब ने करीब हजार एकड़ जमीन हमको दान में दे दी। अपने बेटे और बेटी को लेकर मेरे साथ इस प्रकार रात-दिन मेहनत करते रहे कि कोई पहचान भी नहीं सकता था कि ये राजा-महाराजा हैं। कुरसैला में दरभंगा के महाराजाधिराज अपनी पत्नी सहित स्वयं चले गये। एक लाख चौरा हजार एकड का दान विनोबा के चरणों में चढ़ा दिया! कहने लगे, "महाराज, आंदोलन की जो सेवा कर सकता हूँ, करने के लिए हाजिर हूँ।" गया जिले में जयप्रकाश बाबू के साथ भूदान के सिलसिले में मैं घूम रही थी। अमावा-टिकारी के राजकुमार ने हजारों एकड़ जमीन में से अपने परिवार के लिए सिर्फ तीस एकड जमीन रखकर बाकी सारी जमीन आंदोलन में दे दी और स्वय सिपाही बनकर हम लोगों के साथ काम करने लगे।

रोमांचकारी अनोखी प्रक्रिया

आप कानून से जमीन छीन सकते थे, लेकिन क्या कोई कानून अमीर के हृदय मे क्रांतिकारी आंदोलन के लिए, गरीब के लिए वह मुहब्बत पैदा कर सकता था, जो मुहब्बत विनोबा का यह दान पैदा कर रहा है? इसीलिए जवाहरलालजी को पार्लमेंट के सदस्यों की सभा में कहना पड़ा कि यह जो अमीरों और गरीबों के निराकरण में, अमीर का ही सहयोग और उसकी ही सम्मति प्राप्त करने का ढंग, विनोबा ने निकाला है, वह अपने ढंग का अनूठा और अपूर्व है। इतिहास में इससे पहले कभी ऐसा देखा नहीं गया। इसमें व्यक्तियों का सहयोग है और वर्ग का निराकरण है। आज तक संसार ने हमसे कहा कि बिना

वर्ग-संघर्ष के वर्ग-निराकरण हो नहीं सकता और यह कि सामाजिक जीवन की बुनियाद ही संघर्ष है। आज एक वागी सामने वढ़ा है, एक महान् योगी और प्रयोगी पुरुष का कदम आज भारतवर्ष में आगे वढ़ा है। वह कहता है कि वर्ग-निराकरण होगा—विना वर्ग-संघर्ष के, विना विद्वेष के, विना कलह के। व्यक्तियों का सहयोग और वर्ग का निराकरण, गरीव का विधायक पुरुषार्थ और अमीर का सहयोग, यह जो क्रांति का तरीका है, दान की प्रक्रिया में ही जिसका रोमहर्षक स्वरूप समाया हुआ है, वह न सिर्फ सैद्धांतिक दृष्टि से, बल्कि विशुद्ध दृष्टि से भी हमें कारगर मालूम होता है।

लोकशाही का आधार

पंजाव-पेप्सू में मैं भूदान-दौरे में पिछले दिनों घूम रही थी। एक सिख भाई कहने लगे कि विहारवाले तो भोले-भाले होते हैं, इसलिए उन्होंने जमीन दे दी। जरा पंजाव पधारिये, फिर पता चलेगा कि माँगने से जमीन किस प्रकार मिलती है। यहाँ तो लोग सिर्फ डंडों की भाषा समझते हैं। प्रेम की भाषा वे नहीं जानते। मैंने उनसे कहा, "भाई, यदि मनुष्य की मूलभूत सत्प्रवृत्ति पर आपकी श्रद्धा नहीं है, यदि मनुष्य की मूलभूत अच्छाई पर आपकी निष्ठा नहीं है, तो जनतंत्र वनाने के आप अधिकारी नहीं हैं। जनतंत्र में हर वालिग मर्द-औरत को वोट का अधिकार आपने किस भरोसे दिया है? इसी भरोसे न कि मनुष्य-मात्र के हृदय की मूलभूत प्रेरणा सद्प्रेरणा है, मूलभूत भाव सद्भाव है। अच्छाई की ओर हरएक अग्रसर होना चाहता है। यदि इस प्रकार की हमारी श्रद्धा नहीं है, तो अच्छे समाज का आदर्श हम सामने नहीं रख सकते। हमको तो हुक्मशाही की शरण लेनी चाहिए। फिर तो जनतंत्र को न हम प्राणवान् वना

सकेंगे और न हम जनतंत्र को कभी सफल ही बना सकेंगे।

भगवान् सबके भीतर है

एक बात और है। अमीर के हृदय मे क्या शैतान बसा होता है ? भगवान् सिर्फ गरीबों के हृदय में है और अमीरों के हृदय में नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। भारतीय संस्कृति की यह खूबी है, भारतीय सभ्यता की यह विशेषता है कि हमारी सभ्यता मे हमने 'शैतान' की स्वतंत्र सत्ता कभी नहीं मानी। हमारे इतिहास में रावण की मृत्यु होती है तो उसके शरीर से चिन्मय ज्योति निकलकर भगवान् रामचंद्र प्रभु के हृदय मे समा जाती है। कंस की, शिशुपाल की मृत्यु होती है तो उनके शरीरों से चिन्मय ज्योति निकलकर भगवान् गोपालकृष्ण के हृदय मे समा जाती है। हम तो भगवान् को सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी, सर्व-शक्तिमान् माननेवाले हैं। यदि अमीर के हृदय में ईश्वर को देखने की कोशिश नहीं करेंगे, तो हमारे भगवान् एकदेशीय बन जायेंगे, सर्वदेशीय नहीं रह जायँगे।

एक हृदय-स्पर्शी घटना

सैद्धांतिक बातों को छोड़ दीजिये। मैंने उनको बिहार का अपना एक दृष्टांत सुनाया। उन दिनों मैं पैदल घूम रही थी। कालेज के दो-चार लड़के साथ थे। एक रियासत से हम लोग गुजर रहे थे। बहुत छोटी रियासत थी। साथियों ने कहा कि इस गॉव में जाना बेकार है। राजा बड़े दुष्ट हैं, शराबी है, जुआरी हैं, इनका हृदय-परिवर्तन क्या हो सकता है ? मैंने कहा कि जनता में जनार्दन का दर्शन करने निकले हैं, बगैर दर्शन के मन्दिर के बाहर से ही लौट जायें ? विनोबा का आंदोलन मजाक नहीं है, मखौल नहीं है। इसके पीछे गंभीर मानव-निष्ठा की

बुनियाद है, मानव-निष्ठा का अधिष्ठान है। आज मानव-निष्ठ समाज-दर्शन की और मानव-निष्ठ क्रांति की प्रक्रिया की हमें आवश्यकता है।

युगपुरुष का उदय

जमाने में जो आवश्यकता होती है, उसको पूरी करने के लिए कोई-न-कोई महापुरुष आगे बढ़ता है। एक जमाना था, जिसमें सत्यनिष्ठा की आकांक्षा थी। सत्यनिष्ठा सगुण और साकार हो उठी, जिसको हमने भगवान् रामचंद्र महाप्रभु कहा था। एक जमाना था, जब निष्काम कर्मयोग की आकांक्षा जनता के हृदय में नाच उठी। निष्काम कर्मयोग सगुण और साकार हो गया, जिसको हमने भगवान् गोपालकृष्ण कहा। आज मानव-निष्ठ दर्शन की आकांक्षा जमाने में है। मानव-निष्ठा, सगुण-साकार हो उठी, जिसको मैं संत विनोबा भावे कहती हूँ।

बहन राखी बाँधकर ही लौटेगी

साथी नहीं माने, दूसरे गाँव में चले गये। मैं अकेली राजा साहब की ड्योढ़ी पर पहुँची। दोपहर का समय था। वे बरामदे में आराम से लेटे हुए थे। मैंने दरवाजा खटखटाया। पूछा गया, "कौन है ?" मैंने कहा, "आपकी बहन आयी है।" जब सुना कि बहन आयी है, तो चौंक पड़े। आगे बढ़कर इस तरह देखने लगे कि कहीं कोई पगली तो दरवाजे पर नहीं पहुँच गयी ! पूछने लगे कि यहाँ तक कैसे पहुँच पायीं ? गाँववालों ने तुम्हें बताया नहीं कि मैं किस प्रकार का शैतान आदमी हूँ ? भला, मेरे पास किसी भले आदमी का कोई काम हो सकता है ? तुम एक नवजवान लड़की हो, तुम्हारी भलाई इसीमें है कि तुम लौट जाओ। मैंने कहा, "भाई साहब, आप दुष्ट हैं या शराबी हैं या जुआरी हैं,

इससे मुझे क्या मतलब ? एक बात का जवाब दीजिये। आपके कोई माँ-बहन है या नहीं ? एक संत का संदेश लेकर, एक फकीर का पैगाम लेकर, दरवाजे पर पहुँची हूँ। इस तरह लौटनेवाली यह बहन नहीं है। भाई की कलाई में भू-दान-यज्ञ-आंदोलन के विचार की राखी बाँधकर ही यह बहन लौटेगी, पहले नहीं।"

अन्तर्यामी के दर्शन

दुनिया ने उनको दुष्ट कहा था, शैतान कहा था, लेकिन उनकी आँखों में आँसू छलक पड़े। आँसू क्या थे वे, उनकी सोयी हुई भलाई जाग उठी, उनकी मानवता उमड़ पड़ी। काफी तीर्थाटन मैंने बचपन से किया। लेकिन उस दिन उस सज्जन के आँसुओं में भगवान् का जो साक्षात्कार मैंने पाया, भगवान् का जो मंगलमय साक्षात्कार और दर्शन मैंने अनुभव किया, वह न हरिद्वार-ऋषिकेश में किया था, न कहीं गया में या नवद्वीप और जगन्नाथ में पाया था। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, "बहन, अन्दर पधारिये।" सभा का आयोजन भी किया। सभा में ५०० एकड़ जेरकाश्त जमीन में से १२५ एकड़ जमीन उन्होंने दान में दे दी। गाँववालों ने भी जमीन दी। चार घंटे के भीतर २१५ एकड़ जमीन का दान लेकर मैं उस गाँव से लौटी। इसलिए यह कहना तो बेकार है कि लोग दान नहीं देते। जो परमात्मा प्रह्लाद के लिए खंभे में से प्रकट हो सका, वह हम लोगों के लिए, गरीबों के लिए, अमीर के हृदय में से प्रकट होनेवाला है, प्रकट हो रहा है।

आध्यात्मिक शक्ति का चमत्कार

जब विनोबा ने तेलंगाना में आन्दोलन शुरू किया और कहा, "माँगने से मैं जमीन की समस्या हल करूँगा", तब सुशिक्षित

लोग मजाक करने लगे, खिल्ली उड़ाने लगे। सुशिक्षितों का तर्क, कुतर्क, वितर्क चलता गया। पर संत का कदम बढ़ता गया और कदम-कदम पर धरती बरसती गयी। आज दो-ढाई वर्षों से अकेला घूमता हुआ यह फकीर लाखों एकड भूमि इकट्ठी कर रहा है। क्या क्रांति के इतिहास में इसका कोई मूल्य आपके पास नहीं है? रूस मे क्रांति के लिए अस्सी साल लग गये, चीन में क्रांति सफल बनाने के लिए बत्तीस साल लग गये और यहाँ ढाई वर्षों में हिन्दुस्तान के सारे वायु-मडल में विनोबा ने बिजली दौडा दी है। सभी राजनैतिक पक्षों का सैद्धांतिक समर्थन उनको प्राप्त हुआ है। आज किसीका इस आन्दोलन से विरोध नहीं है। विनोबा-जी के दान की प्रक्रिया में यह एक ऐसी अपूर्व शक्ति है कि उसमें आध्यात्मिक शक्ति का ही चमत्कार दिखाई पड़ता है।

गरीब का दान : हमारी शक्ति का स्रोत

आप कहेंगे कि अमीर से आप दान लेते हैं सो तो ठीक है, लेकिन गरीब से दान क्यो लिया जाता है? वास्तव में गरीब से जो दान हमे मिलता है और हम मॉगते हैं, वही हमारे आन्दोलन की शक्ति का स्रोत है। आप मुझे बतलाइये कि आखिर समाज में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, जिसकी कोख से यह अमीरी और गरीबी निर्माण हुई है, किसके पुरुषार्थ पर समाज में निर्भर है? गरीब तो करोडो की तादाद मे हैं। १०० में से लगभंग ९५ गरीब हैं और ५ अमीर हैं। ये ९५ गरीब यदि अपने ही शोपण मे अमीर को मदद नहीं देंगे, यदि अपने ही ऊपर अन्याय करने मे अमीर की मदद नहीं करेंगे, तो क्या आप सोचते हैं कि मुट्ठी भर अमीर अपनी अमीरी को कायम रख सकेंगे? तिलक महाराज ने एक दिन भारतवासियो से कहा था कि डेढ़ लाख अंग्रेज चालीस करोड़ भारतीयो पर छह सौ मील दूर से राज्य करते हैं, इसमे

अंग्रेजों की बहादुरी नहीं है। भारतीयों में ही आत्म-विश्वास का अभाव है, धैर्य और साहस का अभाव है। उन्होंने कहा कि उठो, खड़े हो जाओ और कहो कि 'स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है', जिसे या तो प्राप्त करूँगा या मर मिटूँगा। आज विनोबा गरीबों से कहते हैं कि उठो, सीना तानकर खड़े होकर कह दो 'भूखी जनता अब न सहेगी, धन और धरती बँटकर रहेगी।' यदि करोड़ों गरीब इकट्ठे हो जायँगे, संगठित हो जायँगे, तो अमीरों के लिए न कानून बनाना पड़ेगा, न मुट्ठी भर अमीरों के ऊपर हथियार ही उठाना पड़ेगा और न उनकी तरफ आँख उठाकर देखने की ही आवश्यकता पड़ेगी। गरीबों के संगठन मात्र में गरीबी और अमीरी का अन्त करने की शक्ति है। इसीमें पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था की मौत है। इसलिए गरीबों से दान लेना एक वैज्ञानिक तरीका है।

गरीबी-अमीरी की जड़

दूसरी एक बात और भी है। आखिर गरीबी-अमीरी पैदा कहाँ से होती है? गरीबी और अमीरी की जड़ या शोषण की प्रवृत्ति की जड़, निजी मालकियत और मिल्कियत की लालसा में है। आज जो गरीब है, वह क्या इसलिए गरीब है कि अपरिग्रह चाहता है? यह बात तो है ही नहीं। वह तो अमीर बनना चाहता है, लेकिन अमीर बनने की कोशिश में वह असफल रह जाता है। असफल अमीर का नाम गरीब है और सफल गरीब का नाम अमीर है। जब तक मनुष्य के हृदय में निजी मालकियत और मिल्कियत का लालच रहेगा, जब तक संग्रह की आकांक्षा और स्वामित्व का प्रलोभन रहेगा, तब तक शोषण की जड़ समाज में से कटनेवाली नहीं है। गरीब और

अमीर सबके हृदय से स्वामित्व की इस आकांक्षा और संग्रह की लालसा को हटाना पड़ेगा ।

मंत्र-द्रष्टा युग-पुरुष

विनोबा एक ऋषि हैं । 'ऋषयो मंत्र-द्रष्टारः ।' ऋषि मंत्र को देखनेवाले और मंत्र को सिद्ध बनानेवाले होते हैं । विनोबाजी ने देख लिया कि यदि हम वर्ग-विहीन, शोषण-रहित समाज बनाना चाहते हैं, समता का राज्य, राम-राज्य का निर्माण करना चाहते हैं, तो सिर्फ पूँजीवाद को हटाना, अन्य किसी वाद को या गांधीवाद को लाना पर्याप्त नहीं होगा । मनुष्यमात्र के हृदय से ही संग्रह की अभिलाषा को हटाना पड़ेगा । इसके लिए संग्रह और स्वामित्व के बारे में विनोबाजी समाज में एक नया रुख पैदा कर रहे हैं ।

दरिद्रनारायण का प्रसाद

तीसरी बात यह है कि गरीब से जो भूदान हमें मिलता है, उसका नैतिक प्रभाव अमीर पर पड़ता है । मैं राँची जिले में गुमला सब-डिवीजन में काम कर रही थी । कोदरो नाम के गाँव में चली गयी । जमीनवाले भाई आगे बढ़े । एक भाई ने पचास एकड़ में से तेरह एकड़ का दान दिया, दूसरे भाई ने पचीस में से तीन एकड का दान दिया । जब सभा से लौटने को हुई, तो पेड़ की ओट से एक बहन आगे बढ़ी । चीथड़ों में लिपटा हुआ बदन था । कहने लगी कि यह चालीस डिसमल जमीन है, ले लीजिये । साथ जो भाई थे, हँसने लगे । कहने लगे, बहनजी, यह तो मुसम्मात है, नौकरानी है, हमारे घरों में बर्तन माँजती है, सिर्फ चालीस डिसमल जमीन इसके पास है, इसके दो बेटियाँ भी हैं । इससे आप क्या लीजियेगा ? मैंने कहा कि बहन, आपसे हम दान

क्या ले, आप यह चालीस डिसमल जमीन विनोबा का प्रसाद समझकर वापस ले लीजिये। आप यदि जमीन जोतना चाहेंगी, तो जब बँटवारा होगा, आपको भी हम जमीन दिला देंगे। वह रोने लगी, हाथ जोड़कर कहने लगी, "मैं गरीब हूँ, इसलिए मेरा दान लौटा रही हो? अमीर का दान तो ले लिया और मुझ गरीब का दान लौटा रही हो?" आगे वह मुझसे पूछती है, 'क्या विदुर का साग भगवान् को प्रिय नहीं था? क्या सुदामा के तंदुल भगवान् को प्रिय नहीं थे, जो आज मुझ गरीब का दान लौटाया जा रहा है?" उसको मैं क्या जवाब देती? मैं कायल हो गयी। चरणों में झुककर उसे मैंने प्रणाम किया और दरिद्रनारायण का वह प्रसाद लेकर मैं आगे बढ़ी।

दूसरों को प्रेरणा मिली

दूसरे दिन सुबह उठी तो मेरे पड़ाव के सामने उस गाँव के सभी भूमिधारी भाइयों को मैंने पाया। जिसने दान दिया था, वह कहने लगा कि बहनजी, रात भर सो नहीं सका। मुसम्मात ने उठकर चालीस डिसमल जमीन दे दी। पचास एकड़ में से मैंने सिर्फ तेरह एकड़ दी, यह ठीक नहीं हुआ। सत्रह एकड़ का दान और लिख लीजिये। जिसने पचीस एकड़ में से तीन एकड़ का दान दिया था, उसने चौदह एकड़ जमीन और दी। बाकी भूमिधारी भाइयों ने भी थोड़ी-थोड़ी जमीन और दे दी। उस मुसम्मात के दान का यह प्रभाव रहा।

गरीब से दान क्यों लिया जाता है, इसका और एक वैज्ञानिक कारण निवेदन करना चाहती हूँ। अमीरों को हटाने के बाद जो छोटे-बड़े गरीब रहेंगे—कोई पाँच एकड़ का मालिक, कोई दस एकड़ का मालिक, कोई पन्द्रह एकड़ का मालिक—इनको एक सतह पर लाने के लिए हम क्या करेंगे? इनके बारे

मे भी तो सोचना पड़ेगा। जब रूस में अमीरों को हटाया गया तो स्टालिन के सामने 'कुलक्स' का याने छोटे-छोटे किसानों का सवाल आया। भूमि जब्त कराने के लिए और सामुदायिक खेती के लिए, किसान तैयार नहीं थे। स्टालिन उनको मना नहीं सका। नतीजा यह हुआ कि चालीस लाख किसानो की हत्या करनी पड़ी, उनका खून बहाना पड़ा। आज अमीरों को हटाने के लिए एक लड़ाई लडें, कल जो छोटे-छोटे गरीब हैं उनमें 'विधायक ऐक्य-भावना' का निर्माण करने के लिए क्या फिर दूसरा क्रातिकारी आन्दोलन छेड़ा जायगा? इसलिए आज गरीबों में एक-दूसरे के लिए हमदर्दी पैदा करने की योजना भी हमको इसी आन्दोलन में करनी पड़ रही है।

सभी बड़े-छोटे शोषक

सब चीजो का तात्पर्य और सार एक ही है। शोषण की प्रवृत्ति आज समाज मे सार्वत्रिक है। न कोई गरीब है, न कोई अमीर। हम और आप, सभी शोषक हैं। कोई छोटा शोषक है, कोई बडा शोषक। पॉच एकड़वाले की तुलना में पचीस एकड़-वाला अमीर और शोषक बन जाता है। पचास एकड़वाले की तुलना में सौ एकडवाला शोषक और अमीर बन जाता है। हर कोई अपने से गरीब को नीचे दबाने की कोशिश करता है— अपने से जो गरीब है उसको कुचलने की, रौंदने की कोशिश करता है। इसलिए दान भी सार्वत्रिक होगा। हर व्यक्ति के हृदय से शोषण की वृत्ति हटानी पड़ेगी।

बॅटवारे के तरीके का रहस्य

जो जमीन हमको दान में मिलती है, वह जिस गॉव मे मिलती है, उसी गॉव के भूमिहीनो में बॉटी जानी चाहिए। यह

बँटवारे की योजना का पहला नियम है। बँटवारा या वितरण विनोबाजी की योजना के अनुसार होता है, फिर चाहे बँटवारा कोई भी करे। बँटवारा करने के लिए विनोबाजी पक्ष-निरपेक्ष ही नहीं, पक्षातीत वृत्ति के व्यक्तियों को नियुक्त कर लेते है। उनका एक बोर्ड बनाया जाता है। उस बोर्ड में सरकार के नुमाइंदे रहते हैं। सरकार उसको मंजूरी दे देती है। वितरण के लिए कानून बनाया जाता है। मसलन हैदराबाद रियासत में, मध्य-प्रदेश में, उत्कल-प्रदेश में, उत्तर-प्रदेश में वितरण के लिए कानून बनाये गये हैं और हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों मे कानून बनाये जा रहे हैं। ये जो बोर्ड बनते हैं, वे जिलावार समितियाँ नियुक्त कर देते हैं। फिर बोर्ड के सदस्य और सरकारी कर्मचारी, तहसीलदार, पटवारी इत्यादि सरकारी कागजों को लेकर उस हलके में चले जाते हैं, जिस इलाके मे वितरण करना होता है। आठ-दस दिन वहाँ रहकर उन लोगों को जमीन का सर्वे करना पड़ता है। निरीक्षण करना पड़ता है, भूमिहीन परिवार कितने हैं, जमीन किस-किसकी है, यह सब देखने के बाद, जाँच करने के बाद, सात दिन की नोटिस दी जाती है और आम सभा में बँटवारा किया जाता है। आम सभा मे ही बँटवारा होगा, यह वितरण की योजना का दूसरा नियम है। उस सभा में बेजमीन भाई खड़े हो जाते हैं। बेजमीन से मेरा मतलब उनसे है, जिनके पास एक चप्पा भर भी जमीन नहीं, जो जमीन जोतते हैं, लेकिन मालिक नहीं और जिनके पास दूसरा कोई रोजगार नहीं। ऐसे व्यक्तियों को फी परिवार तरी जमीन एक एकड़ और खुश्क जमीन पाँच एकड़ के हिसाब से बाँटी जाती है। परिवार से मेरा मतलब संयुक्त परिवार से नहीं, एक स्वतन्त्र परिवार से है। जमीन हल्की हो, तो ज्यादा भी देनी पड़ती है। हैदराबाद रियासत में हमको खुश्क जमीन कहीं-कहीं बीस-इक्कीस एकड़

तक देनी पडी। उत्तर प्रदेश में तरी जमीन चार एकड तक, तो खुश्क जमीन तेरह-चौदह एकड़ तक भी देनी पड़ी। लेकिन एक औसत, एक मोटा हिसाब मैंने आपके सामने पेश किया। जमीन देते समय उस किसान पर तीन शर्तें लगायी जाती हैं। पहली शर्त यह कि जमीन बेचने का उसको अधिकार नहीं रहेगा। आपको मालूम होगा कि उत्कल में, छोटा नागपुर में सरकार ने आदिवासियों को कुछ जमीन बाँट दी। शराब के पीछे, जुए के पीछे चार-छह महीनों में उन्होंने जमीनें बेच डालीं। फिर से नंगे-भूखे बेहाल हुए। इसलिए पहली शर्त हमारी यह होगी कि जमीन बेचने का अधिकार उसको नहीं रहेगा। साहूकार के यहाँ रेहन करने का, गिरवी रखने का और जमीन पड़ती रखने का अधिकार उसे नहीं रहेगा। फर्ज कीजिये, आज किसी किसान को हम जमीन देते हैं, दो-तीन महीनों के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। यदि उसके बेटे जमीन जोतनेवाले होंगे, तो उस जमीन पर उनका अधिकार होगा। यदि बेटे जमीन जोतनेवाले नहीं होंगे, शहरों में कहीं नौकरी करनेवाले होंगे, तो बेटों का जमीन पर अधिकार नहीं हो सकेगा। जमीन समिति को लौटायी जायगी और दूसरे बेजमीन परिवार को दिलाई जायगी। मकसद हमारा यह है कि जमीन जोतनेवाले के पास जमीन रहे। उत्पादन करनेवाले के पास उत्पादन के साधन रहें।

साधन-दान

इस जमीन के साथ-साथ जहाँ संभव हो, खेती के औजार भी हम दे देते हैं। हल, बैलजोडी, बीज, सिंचाई का प्रबंध न हो, तो कुएँ खुदवाना इत्यादि सारी मदद भूदान यज्ञ-समिति यथासंभव करती है। इसके लिए साधन-दान का कदम उठाया

गया है। लोग कहते हैं कि क्या जमीन के बँटवारे से ही क्रांति होगी? यह तो हमारा दावा कभी नहीं था।

जमीन का बँटवारा पहला कदम है

हिन्दुस्तान कृषि-प्रधान देश है। इसलिए कृषि-प्रधान देश में क्रांति की विभूति किसान होगा। जहाँ अस्सी फीसदी लोग देहात में रहते हैं, वहाँ पहले देहातों की समस्या हल होगी, भूमि का पुनर्वितरण होगा और बाद में जो बीस प्रतिशत लोग बचते हैं, उनकी समस्याएँ सुलझाई जायँगी। यह तो निवेदन करने की आवश्यकता नहीं है कि जिस प्रकार जमीन पर से अनुत्पादक की मालकियत को हम हटाना चाहते हैं, उसी प्रकार उद्योग-धंधों के क्षेत्र में से भी अनुत्पादक की मालकियत जब तक हम नहीं हटायेंगे, गरीबी और अमीरी की जड़ पूरी तरह समाज में से नष्ट नहीं होगी, हमारा कदम रुकनेवाला नहीं है। इस मुल्क में अहिंसात्मक ढंग से, सत्याग्रह की नीति से, या तो गरीबी-अमीरी खत्म होगी या फिर हम खतम होंगे, इस संकल्प के साथ विनोबाजी और उनके साथी अपना कदम दृढ़तापूर्वक, निर्भयतापूर्वक, संयमपूर्वक और निर्वैर वृत्ति से आगे बढ़ा रहे हैं। शहरों के बारे में हमारी योजना क्या है?

कारखाने और बड़े उद्योगों पर लोक-स्वामित्व

ये जो बड़े-बड़े उद्योग-धंधे हैं, कारखाने हैं, खदानें हैं, फैक्टरीज इत्यादि हैं, इनके बारे में एक बात तो यह है कि ये बाँटे नहीं जा सकते। जमीन का सौ एकड़ का एक टुकड़ा है। दस-दस के दस टुकड़े कर दें और बाँट दें तो टुकड़ों के बँटवारे के साथ, जमीन के वितरण के साथ, मालकियत का वितरण हो जाता है, बँटवारा हो जाता है। कारखाने में चार मालिक हैं,

उनकी जगह यदि दो हजार मजदूरों को मालिक बना दें, तो मालकियत का बँटवारा नहीं होता, गुणाकार होता है। कारखाने बाँटे नहीं जा सकते, यह उनके बारे में दिक्कत है। उन पर समाज की मालकियत कायम करनी होगी। 'जाति की मालकियत' हम कायम करेंगे। उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करेंगे या समाजीकरण, यह एक स्वतंत्र विषय है। इसलिए विस्तारपूर्वक उसकी मीमांसा करना यहाँ संभव नहीं है।

अनुत्पादक व्यवसायों का निराकरण

इसके अलावा शहरों में अनुत्पादक व्यवसाय हैं। आज शहरों में रहनेवाले जो लोग हैं, उनमें ज्यादा-से-ज्यादा अनुत्पादक व्यवसाय करनेवालों की संख्या है। किराये पर, मुनाफे पर, दलाली पर, ब्याज पर, ठेके पर जीना, ये सब रोजगार बन गये हैं। यह तो छोड़ दीजिये। लोगों के गुनाहों पर जीना भी रोजगार बन गया है; हम उन्हें वकील कहते हैं। लोगों की बीमारियों पर जीने का भी पेशा बन गया है; हम उन्हें डाक्टर कहते हैं। बीमार तो बेचारा बीमारी के मारे परेशान है, मुसीबत में फँसा हुआ रहता है; लेकिन डाक्टर के लिए तो वह वित्तोपार्जन का सुनहला अवसर है। गुनहगार तो परेशान है गुनाह के मारे; लेकिन वकील साहब को तो ज्यादा फीस लेने के लिए मौका मिलता है। ये जो पेशे हैं, सब समाजविरोधी पेशे हैं। समाज में जब तक इस प्रकार की अर्थ-व्यवस्था रहेगी, तब तक एक की आपत्ति दूसरे के लिए सुंदर अवसर बनकर खड़ी हो जाती है। एक की मुसीबत जब तक दूसरे के लिए मौका और अवसर का रूप धारण करेगी, तब तक समाज में से शोषण का अंत नहीं हो सकेगा, समता का राज्य हम निर्माण नहीं कर सकेंगे। इसलिए इन अनुत्पादक व्यवसायों को रोजगारों के पेशों के रूप में खत्म

करेंगे और सेवा के रूप में अवशिष्ट रखेंगे। यह हमारी योजना उनके बारे में है। इसके लिए संपत्तिदान का तीसरा कदम उठाया गया है और चौथा कदम श्रमदान का है।

श्रम-दान

आज उत्पादक परिश्रम की इज्जत समाज में नहीं है। इसलिए सब परिश्रम टालने की कोशिश करते हैं। हम और आप सब करते हैं। परिश्रम में किसीको आनन्द नहीं आता। आनन्द का अनुभव आज मजदूर और किसान भी नहीं कर रहे हैं। वे श्रम इसलिए नहीं करते कि वे धर्मनिष्ठ हैं, लेकिन वे लाचार हैं, इसलिए श्रम करते हैं। उत्पादक-परिश्रम का जब तक समाज में मूल्य नहीं रहेगा, उत्पादक-परिश्रम की कोई प्रतिष्ठा नहीं होगी, तब तक हम परिश्रम टालने की कोशिश करेंगे। टालने की कोशिश करेंगे तब तक एक वर्ग श्रमजीवी का और दूसरा वर्ग सुखजीवी का रहेगा। वर्ग रहेंगे तब तक शोषण रहेगा और शोषण रहेगा तब तक राम-राज्य का निर्माण नहीं होगा। इसलिए हर व्यक्ति के हृदय में उत्पादक-परिश्रम की प्रतिष्ठा निर्माण करनेवाला श्रमदान का चौथा कदम विनोवाजी ने बढ़ाया। इन संकेतों के बारे में बहुत ही संक्षेप में मैं जिक्र कर सकती हूँ। इससे ज्यादा इतने विशाल आन्दोलन के सभी पहलुओं पर यहाँ प्रकाश डालना संभव नहीं है।

बुद्धि-दान और समय-दान

अब, विनोबा ने बुद्धि-दान और समय-दान का कदम बढ़ाया है। आप जानते हैं, विनोबाजी एक ऐसे निस्पृह पुरुष हैं, जिनके हृदय में न सत्ता की अभिलाषा है, न संपत्ति का मोह है, न सम्मान का प्रलोभन है। सारा संसार उनके लिए तृणवत् बन

गया है। ऐसे एक योगी पुरुष का यह आन्दोलन है। उन्होंने उसे योगारूढ़ बुद्धि से शुरू किया है। यह वाद का या पक्ष का आंदोलन नहीं है। यह पक्ष-निरपेक्ष और पक्षातीत आन्दोलन है। वाद तो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से तोड़नेवाली चीज है। 'युज्यते इति योगः' एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़नेवाला, सह-जीवन के विज्ञान का और सह-जीवन की कला का नाम ही 'योग' है। विनोबा का यह आन्दोलन गरीब-गरीब को और गरीब-अमीर को जोड़नेवाला है, भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षों को अपने-अपने पक्ष-द्वेषों को, व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेष को भुलाकर नव-राष्ट्र के निर्माण में कंधे-से-कंधा लगाकर काम करने का मौका देनेवाला एक सुंदर आंदोलन है। इसमें मदद करना, यथा-शक्ति, यथाबुद्धि, स्वेच्छा से अपने पास जो कुछ हो समर्पण कर देना, सबका फर्ज है। इसलिए मेरा अनुरोध है कि विनोबा के आंदोलन में आप लोग मदद कीजिये।

पहली मदद तो बुद्धि-दान को चाहते हैं। विचार-दान की भीख आप लोगों से माँगते हैं। तटस्थ बुद्धि से, सारे पक्षाभि-निवेशों को छोड़कर, वादों का आग्रह छोड़कर, आप इस आंदो-लन के बारे में सोचें। हमारा विरोध हो, सैद्धांतिक मतभेद हो, तो बात अलग है। लेकिन यदि सैद्धांतिक मतभेद न हो, तो हम तटस्थ प्रेक्षक के रूप में नहीं रह सकते। जमाना तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। संसार में आज जनतंत्र सुरक्षित रखने के लिए सारी दुनिया हिन्दुस्तान की ओर देख रही है। इन तीन-चार वर्षों मे यदि हम जनतंत्र को सत्याग्रह की नीति द्वारा सुरक्षित और साबित नहीं बना पायेंगे, गरीबी और अमीरी को नहीं मिटा सकेंगे, तो न मालूम हिन्दुस्तान में क्या नजारा देखने को मिलेगा! यह विनोबा की वाणी नहीं, यह तो ईश्वर का संकेत है, जो विनोबा की वाणी में समा गया है। ये भारतमाता

के अरमान विनोबा की वाणी में समा गये हैं। यह दान विनोबा नहीं माँग रहा है, यह तो समय का तकाजा है। यह समय की माँग है। इसलिए आप सब लोग सर्वत्र इस आन्दोलन का विचार-प्रचार करने में, कार्यकर्ताओं को मदद देंगे, ऐसी उम्मीद है। आपको जमीन कितनी मिलती है और कितनी नहीं, इसका हिसाब कोई मूल्य नहीं रखता। इस जमीन को अब विनोबा के पास जाने से कोई रोक नहीं सकता। जमीन चल पड़ी है, गंगा की धारा की भाँति बहने लगी है, लोक-राज्य की परिणति लोक-स्वामित्व में होने ही वाली है। जब जनता का राज्य बन जायगा, तो मुट्ठी भर लोगों का संग्रह रहनेवाला नहीं है। यह बतलाने के लिए अब किसी दार्शनिक और ज्योतिषी की जरूरत नहीं। हम इतना ही चाहते हैं कि जमीन का जो वितरण होगा, वह एक नये क्रान्तिकारी समाज का आधारभूत कदम साबित हो, नये समाज का अधिष्ठान बन जाय। नये अर्थशास्त्र का, नये जीवन का दर्शन जनता के सामने इस प्रक्रिया के द्वारा रखा जाय। जमीन के बँटवारे के साथ-साथ हमको ग्रामोद्योग बढ़ाने पड़ेंगे। फी एकड़ पैदावार किस प्रकार बढ़ानी है, यह लोगों को सिखाकर एक एकड़ और पाँच एकड़ जमीन के खण्डों को आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक और लाभदायक बनाना पड़ेगा। हमारे विधायक पुरुषार्थ को आज जमाने ने आह्वान किया है।

सबै भूमि गोपाल की।
सम्पति सब रघुपति कै आही॥

०

हमारे प्रकाशन

साम्ययोग का रेखाचित्र

(विमला)

प्रस्तुत पुस्तिका में साम्यवाद और साम्ययोग की मूलग्राही तात्त्विक तुलना २४ सूत्रों में की गयी है। पुस्तिका कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों और राजनैतिक-कार्य करनेवालों के बड़े काम की है। दाम : दो आना।

भूदान-आरोहण

(नारायण देसाई)

भूदान-यज्ञ अब देश की रग-रग में व्याप्त हो गया है। आंदोलन के उद्भव और विकास का सारगर्भित और मूलग्राही विवेचन सजीव भाषा में किया गया है। यह पुस्तक जितनी कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी है, उतनी ही पढ़े-लिखे नगरवासियों तथा ग्रामीण जनता के लिए भी उपादेय है।

दाम : आठ आना।

क्रांति का अगला कदम

(दादा धर्माधिकारी)

"दादा प्रत्येक विचार कसौटी पर कसकर ही प्रस्तुत करते हैं। इससे उनका भाषण श्रोता पर आक्रमण जैसा नहीं होता, बल्कि उसे प्रसन्न कर देता है। ...... युक्ति-बुद्धि से युक्त तथा सेवा की भावना से ओतप्रोत कार्यकर्ताओं के निर्माण में दादा की यह रचना उपयोगी सिद्ध होगी।" विनोबाजी के इन शब्दों के बाद और कुछ कहने को नहीं रह जाता।

दाम : चार आना।

स्त्री-जीवन

(दादा धर्माधिकारी)

लेखक ने नारी-समस्या पर काफी चिन्तन किया है। प्रस्तुत पुस्तिका में उनके इस विषय के क्रांतिकारी लेखों और विचारों का संकलन किया गया है। भारत में नारी जाति की स्थिति, मातृ-प्रतिष्ठा आदि को समझने के लिए यह पुस्तिका क्रांतिकारी होते हुए भी प्रेरक और मार्गदर्शक है।

दाम : चार आना।

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

राजघाट, काशी